• प3यो = परमजी – पप्र – परमयोग = प प प यो • 4PL - 1950.01.14 • 1

• परमजी = प3यो – का – प 1

परमजी

परमजी के पावन चरण

1. **P3Y का अर्थ= परमजी - पप्र - परम -योग = प प प यो**
   प1 - प2 - प3 - यो

प 1. परमजी और उनकी अदृश्य, पावन शक्ति–इस पूर्ण व्यवस्था की आत्मा है।

प 2. पप्र शरीर है। इच्छायें पूर्ण होती हैं। विपत्ति विलीन होती है।

प 3. परमयोग मन है। मन की शान्ति मिलती है।

• प3यो – P3Y – पूर्ण व्यवस्था है। व्यवस्था की सुरक्षा से सभी मिलता है।

2. चीनी खाओ। मिठास का अनुभव लो।
3. P3Y करो • P3Y से होने वाले सुख का अनुभव लो।
4. मिठास का अनुभव, तर्क – वितर्क से नहीं होता है।
5. P3Y से होने वाले सुख का अनुभव भी तर्क – वितर्क से नहीं होता है।
6. P3Y – प3यो सीखने तथा सिखाने में (1) मुँह (2) कान (3) मन का प्रयोग करो।
7. P3Y – प3यो –करने में • प3यो मन ही मन करो। यदि मन ही मन नहीं कर सकते हो – तो मुँह से न्यूनतम आवाज में– P3Y – प3यो करो।

• पप्र = प3यो–का–प 2

1. परमं शरणं गच्छामि।
2. हंसं शरणं गच्छामि।
3. अद्वैतं शरणं गच्छामि।
4. आनन्दं शरणं गच्छामि।
5. चरणं शरणं गच्छामि।

6. हे परमजी
7. मुझ पर कृपा करो
8. सिर झुकाकर, परमजी को नमस्कार करता हूँ।

9. आज मुझे मानसिक शान्ति दो।
10. इच्छा पूर्ण होते ही–पकर में 1– पैसा ➡ परमजी को दूँगा।
11. इच्छा पूर्ण होते ही पकर में–1– नये व्यक्ति को P3Y सिखाऊँगा।

⬆ **पप्र समाप्त** ⬆

9. आज मुझे मानसिक शान्ति दो।

• इसकी जगह, अपनी आवश्यक्तानुसार, एक इच्छा बोलो
• या – पप्रवा – 9^{th} – पुस्तक के अनुसार बोलो।

⬆ **पप्र का वाक्य– 1,2,3,4,5,6,7,8,**

9A आज के भोजन, पानी, दूध, चाय, फल इत्यादि में ⬇ अपनी शक्ति दो, मेरे शरीर का अधिकतम रोग कम हो जाये मैं निरोग व स्वस्थ हो जाऊँ।

10. 1–पैसा = निश्चित नगद
• 1–रूपया, 1–करोड़ : 1 – मिलियन ..... इत्यादि।

11. 1–नया व्यक्ति = नया व्यक्ति का निश्चित संख्या
• 1–11–नये व्यक्ति : 1–कक्षा – 11 –कक्षायें इत्यादि।

• परमयोग = प3यो–का–प3 –यो

1 परम स्वास – 1 से 10

1.1 मुँह से ➡ नाक से

1.2 करो – 1 से 10 – अपनी आवश्यक्तानुसार, अपने ऑफिस में करो, यदि आपकी ऑफिस केवल बौद्धिक काम पर आधारित हो।

2 परमनाद – 1 से 10

2.1 मुँह से ➡ नाक से

2.2 करो – 1 से 10 – अपनी आवश्यक्तानुसार। एक बैठक में – 10 से ज्यादा परमनाद नहीं करो।

3 P3Y मानसिक शाँति और समृद्धि देता है।

3.1 P3Y साथ देता है तथा काम आता है – जब अधिकतम साधन असफल होते हैं।

3.2 असहाय – अवस्था ➡ SOS ➡ में ही, जब जब आपको लगता है कि आप (1) अनिश्चित हैं (2) असुरक्षित हैं (3) असहाय हैं (4) इत्यादि.... तब ➡ P3Y करो।

3.3 जब जब, जहाँ जहाँ, जिस जिस अवस्था में – आपका अपना (1) बुद्धिबल (2) मन बल (3) बाहु बल (4) धन बल (5) जन बल (6) श्रोत्र, पहुँच इत्यादि (7) तंत्र–मंत्र–यंत्र इत्यादि का बल (8) भाग्य, प्रारब्ध, कर्म, इत्यादि – असफल रहे – वहाँ ➡ P3Y करो।

3.4 परम योग सीखो तथा करो। पप्र भी करो – P3Y करो।

3.5 जब, थोड़ी भी मानसिक शान्ति मिले या एक भी इच्छा पूर्ण हो या एक भी समस्या सुलझे–

3.6 तब परमजी –पप्र – परम योग = P3Y में पूर्ण निष्ठा – अधिकतम निष्ठा रखो।

3.7 तब – पप्रवा – 10^{th} का नगद तथा परमजी के लिये दिया गया अन्य नगद–जैसे –

(1) आपके द्वारा दिया गया (2) अन्य प3यो कर्त्ता द्वारा आपको दिया गया (3) प3यो सम्मेलन, सभा इत्यादि में, आपके द्वारा इक्ट्ठा किया गया ।

(1) परमजी की व्यवस्था में अवश्य पहुँचाओ।

(2) P3Y Act, प3यो विधि के अनुसार खर्च करो।

PUSHPINDRA MAHAJAN : 01892-222523, 94180-12523, 70181-57138, 98162-93066
P3Y ONLINE CLASS ON Every Day at 9.00 PM and Sunday 6.00 PM

Join with Google Meet Meeting ID: gndberbahm